स्कूल तेरे कितने नाम...

राहुल मुखोपाध्याय और अर्चना मेहेंदले

भारत में विश्व स्तरीय विश्वविद्यालयों की बात अभी दूर का सपना हो सकती है लेकिन हमारे आसपास ही ऑक्सफोर्डों, केम्ब्रिजों और स्टैनफोर्डों का संसार बसा हुआ है जो अपनी विलक्षणता के लिए नहीं वरन बहुलता के लिए विशिष्ट कहलाते हैं। यहीं पर अनेक असाधारण लोकप्रिय हस्तियाँ भी हैं – विवेकानन्द, मार्टिन लूथर, मैक्स मूलर, अरोबिन्दो, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, इन्दिरा प्रियदर्शिनी, नेहरू, मदर टेरेसा, आइजेक न्यूटन, अल्फ्रेड नोबल, राजीव गाँधी, एनी बेसेंट और हाँ एक नाम और जिसने हमारे 'शिक्षा के माध्यम' की मौजूदा विडम्बना को प्रभावित किया और वह नाम है मैकाले। जी हाँ, ये वास्तव में उन निजी स्कूलों के नाम हैं जो बेंगलुरु और उसके आसपास के शैक्षिक परिदृश्य में छितरे हुए हैं। हमें इनके बारे में एक अध्ययन के दौरान पता चला।

हालाँकि 'वैश्वीकरण या globalisation' को अभी भी यह साबित करना है कि इसका प्रभाव 'पिरामिड के नीचे तक' पहुँचा भी है या नहीं, लेकिन हमारे रोजमर्रा के जीवन में इसके प्रतीकात्मक महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। हमारे चारों ओर तेजी से पनपते ये निजी स्कूल इस ज्ञान से अनजान नहीं हैं। इस प्रकार, 'ग्लोबल' और 'इण्टरनेशनल' जैसे शब्द इन निजी स्कूलों के नामों के न केवल प्रमुख और सहायक निरूपक बन जाते हैं बल्कि एक ऐसा साधन भी बन जाते हैं जिसके माध्यम से माता–पिता की आकांक्षाओं को 'वैश्वीकरण' के वादे की ओर ले जाया जा सके। अक्सर यही आकांक्षाएँ नामों में प्रकट हो जाती हैं जो बड़ी स्पष्टता से यह बताते हैं कि उनकी स्कूली प्रक्रिया किस प्रकार से विद्यार्थियों को निश्चय ही 'न्यू मिलेनियम' का नागरिक बनने की ओर उन्मुख करेगी और 'ब्राइट', 'ब्रिलियंट', 'एक्सेलेंट', 'मग्निफीक' (शायद अँग्रेजी को लेकर हमारा जुनून काफी नहीं था!) और 'कॉन्फिडेंट' 'फ्यूचर' की ओर ले जाएगी। पर कभी–कभी 'वैश्विक' बल को ही अपने आप में पर्याप्त नहीं समझा जाता और उसे सन्तुलित करने के लिए उन भावनाओं की गुहार लगाई जाती है जो धार्मिक और राष्ट्रवादी पुनरुत्थानवाद का समर्थन करते हों। उनके साथ 'गुरुकुल' 'नव भारत' या 'जय हिन्द' जैसे सह–निरूपक जोड़ दिए जाते हैं और यह अपेक्षा की जाती है कि वे हमारे गौरवशाली अतीत तथा उसकी उपलब्धियों का आह्वान करेंगे।

दुर्भाग्य से 'वैश्विक' हमें अपने अतीत की औपनिवेशिक भावनाओं से उबरने में मदद नहीं करता – उस भाषा के सन्दर्भ में भी जो हाल के दशकों में आर्थिक और सांस्कृतिक 'पूँजी' का साधन बन गई है और उस सन्दर्भ में भी जिसमें हम औपनिवेशिक प्रतीकात्मक आदेश को सतत श्रद्धांजलि देते आ रहे हैं। इसलिए निजी गैर सहायता प्राप्त स्कूलों (जिन्होंने शिक्षा के माध्यम के रूप में कन्नड़ भाषा का अनुमोदन करके मान्यता प्राप्त की है) में भी अपनी वर्नाकुलर भाषा की नाममात्र की जड़ों के साथ में, बाजार की भाषा का सम्मान करते हुए, 'इंग्लिश' या 'कॉन्वेंट' शब्द लगा होता है। इसलिए किसी ऐसे 'विद्यापीठ' का मिलना कठिन नहीं होगा जो अपने नाम में शायद सर्वश्रेष्ठ भारतीय परम्पराओं व भारतीय संस्कृति को कायम रखता हो – और साथ ही आज के बाजार की इच्छित भाषा 'अँग्रेजी' को भी अपने साथ जोड़ लेता हो। इसी तरह कई निजी स्कूल अपने नाम के साथ 'पब्लिक स्कूल' लगाने से झिझकते नहीं हैं। वैसे यह बात और है कि उनके अभिविन्यास या रोजमर्रा के संचालन में 'पब्लिकपन' का कोई स्पष्ट लक्षण देखने को नहीं मिलता। 'पब्लिक' के इस अर्थ का सार ब्रिटिश पब्लिक स्कूल प्रणाली में निहित है; जो एक स्पष्ट निजी स्कूल प्रणाली है और जो कुलीन अल्पसंख्यक वर्ग के लिए है। इसमें आश्चर्य नहीं कि उत्तर औपनिवेशिक राज्य हमारे स्कूलों में शिक्षण के माध्यम का प्रभावी रूप से लोकतंत्रीकरण करने में तो असफल रहा ही है, साथ ही हमारी स्कूल प्रणाली में से 'विशिष्टता' के चिह्नों को मिटाने के अपने प्रयास में भी असमर्थ रहा है।

देश भर के निजी स्कूल अपने स्कूल का नामकरण करने के लिए कई रणनीतिक तरीके प्रयोग में लाते हैं ताकि वे शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से बढ़ते हुए इसी प्रकार के अन्य स्कूलों से अलग पहचाने जा सकें। शिक्षा

के नए बाजार में स्कूल का नाम सिर्फ संस्थागत पहचान को परिभाषित करने की आवश्यकता से परे चला जाता है। असल में यह तो एक ऐसे साधन के रूप में काम करता है जो ब्रांड आइडेंटिटी स्थापित करे, क्योंकि भ्रमित किन्तु उत्सुक उपभोक्ता माता–पिताओं को लुभाने के लिए यह आवश्यक है। सामान्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र में स्कूलों के बारे में व्यवस्थित, सम्पूर्ण, पारदर्शी और विश्वसनीय जानकारी की कमी होती है इसलिए स्कूल का नाम उसकी गुणवत्ता को पहचानने का एक ठोस कारक बन जाता है। निस्सन्देह अपने आपको अद्वितीय बताने की ललक में निजी स्कूल विविध प्रकार के नामों के बारे में सोचते हैं। जैसा कि हमने देखा कि विकल्प तो असीमित हैं, 'ग्लोबल' के जाने–पहचाने विकल्प या विश्वस्तरीय ख्याति प्राप्त शैक्षिक संस्थाओं के नामों को सीधे अपना लेना और या फिर विविध धारणाओं वाले राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा साम्प्रदायिक राजनीतिक व्यक्तियों और राष्ट्रकर्मियों के नाम पर अपने स्कूल का नामकरण करना। निजी स्कूलों के नामकरण में इस विशाल 'विकल्प' की तुलना अधिकांश सरकारी स्कूल के नामों के दो प्रमुख निरूपकों के साथ करना दिलचस्प होगा। ये दो निरूपक हैं 'सरकारी' जो इन स्कूलों के सार्वजनिक स्वत्व को दिखाता है और उस 'इलाके' का नाम जहाँ वह स्कूल स्थित है। इस तुलना में कुछ बातें साफ नजर आती हैं।

पहली, किसी भी प्राइवेट स्कूल के नाम में 'प्राइवेट' शब्द निरूपक के रूप में नहीं आता और वे 'पब्लिक' के आह्वान के माध्यम से अपने 'प्राइवेट' लक्षण को छिपा भी सकते हैं – 'पब्लिक' एक ऐसा निरूपक जिसकी व्युत्पत्ति अस्थिर है विशेष रूप से तब जब हम भारतीय स्कूल प्रणाली में इसका उपयोग करने पर आते हैं। दूसरी ओर, सरकारी स्कूलों का पब्लिक स्वत्व, जिसे स्थानीय समुदाय के लिए ऊर्ध्वगामी जवाबदेही तंत्र के माध्यम से बनाया जा सकता था लेकिन 'सरकार' के अपने स्कूलों पर अधोमुखी नियन्त्रण के प्रभाव के कारण ऐसा नहीं हो पाया। दूसरी बात, निजी स्कूलों के सामने नामकरण के ये 'विकल्प' और कुछ नहीं सिर्फ बाजार तंत्र द्वारा निर्देशित 'विकल्प' की एक धारणा है। ऐसी धारणा जो सामाजिक प्रवाह में प्रबलित होकर अक्सर इस प्रकार के स्कूलों में परिणत होती है और एक ऐसी धारणा जिसे वर्तमान स्कूल प्रणाली के पुनरुद्धार के लिए बाजार का समर्थन मिलता है। इसके विपरीत सरकारी स्कूलों को 'इलाके' के सीमित दायरे के भीतर बढ़ना और कायम रहना पड़ता है। उनके पास किसी और कल्पना शक्ति की गुहार लगाने की स्वतंत्रता भी नहीं होती कि जो इस तरह के स्कूल को विशिष्ट बना सके जैसे कि संस्कृति, व्यक्तित्व या फिर इतिहास। लेकिन कल्पना की यही कमी 'पब्लिक' स्कूलों का गैर विशिष्ट लक्षण है। ये स्कूल जनता के हितों के लिए बने हैं और उनकी पूर्ति भी करते हैं। हालाँकि 'इलाके' की पूरी क्षमता शायद सामान्य स्कूल प्रणाली के नाकाम सपने में अधूरी ही पड़ी हुई है।

शायद अब वक्त आ गया है कि हम यह पूछें कि 'प्राइवेट स्कूलों के लिए 'पब्लिक' होने का क्या मतलब है। यह एक ऐसा सवाल है जो 2009 के अनिवार्य शिक्षा का अधिकार आधिनियम के तहत 25% का प्रावधान उठाने की कोशिश करता है, जबकि ये स्कूल अपने अन्तःस्थापित और प्रचारित गुणों के मामले में और कुछ भी हों 'पब्लिक' तो नहीं हैं। शायद यही वह समय है जब हमें यह भी पूछना चाहिए कि 'सरकारी' स्कूलों के लिए 'पब्लिक' होने का क्या मतलब है, एक ऐसा सवाल जो देश के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दे पाने की इसकी क्षमता के बारे में व्यापक सरोकार से जन्म लेता है। सम्भवतः अब यह पूछना भी सही होगा कि निजी स्कूलों द्वारा स्थापित विभिन्न विकल्प, इच्छित आदर्श और विशिष्ट पहचान आदि हमारे वैभिवक समाज में 'पब्लिक' और 'प्राइवेट' शिक्षा के उद्देश्यों बीच सन्तुलन कैसे करेंगे।

शायद इसका जवाब बेतुके छन्दों के माहिर लेखक सुकुमार रे की कुछ बदलकर प्रस्तुत की गई इन विचारोत्तेजक पंक्तियों में मिल सके :

"वे दावा करते हैं कि (नाम) मेरा है – शायद आप खुद को अपने नाम का मालिक समझते हैं!

लेकिन यह (नाम) मालिक है (स्कूल का), मेरे दोस्तो – उसी से तो (स्कूल) जाने जाते हैं।"[i]

इसमें शक नहीं कि नामों का प्रतीकात्मक महत्त्व है जिसके द्वारा व्यक्तियों या संस्थाओं का स्वत्व बढ़ता है।

---

[i] सुकुमार रे की Mustache Thievery के मूल अनुवाद की पंक्तियाँ इस प्रकार से हैं : "They claim the mustache is mine—as though it's something you can own! The mustache owns the man, my friends—that's how we all are known."

यह अनुवाद http://www.parabaas.com/translation/database/translations/poems/sukumar_mustache.html से लिया गया है।

लेकिन स्कूल के नामों के चयन का महत्त्व इस बात में है कि या तो बाजार के भौतिक मूल्यों से कुछ लेने की सम्भावना हो या फिर उन सांस्कृतिक मूल्यों से जो शिक्षा को 'पब्लिक' की भलाई के रूप में समझते हों। भारत में निजी और सार्वजनिक दोनों स्कूलों को इस बारे में फिर से बहुत सोचना है कि *स्कूल का नाम भले ही कुछ भी हो*, लेकिन क्या वह शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी कार्य कर रहा है?

राहुल मुखोपाध्याय अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु में फैकल्टी के सदस्य हैं। उन्हें शिक्षा के समाजशास्त्र, शिक्षा नीति और संगठनों के समाजशास्त्र के क्षेत्र में शोध करने में रुचि है। उनसे rahul.mukhopadhyay@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अर्चना मेहेंदले सेण्टर फॉर एजुकेशन इनोवेशन एण्ड एक्शन रिसर्च, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेज, मुम्बई में प्रोफेसर हैं। उनसे archana.mehendale@tiss.edu पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल